

सूरह तक्वीर^[1] - 81



सूरह तक्वीर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 29 आयतें हैं।

- इस में प्रलय के दिन सूर्य के लपेट दिये जाने के लिये ((कुव्विरत)) शब्द आया है। इस लिये इस का नाम सूरह तक्वीर है। जिस का अर्थ लपेटना है।^[1]
- इस की आयत 1 से 6 तक प्रलय की प्रथम घटना और आयत 7 से 14 तक में दूसरी घटना का चित्रण किया गया है।
- आयत 15 से 25 तक में यह बताया गया है कि कुर्आन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सूचना दे रहे हैं वह सत्य पर आधारित है।
- आयत 26 से 29 तक में इन्कार करने वालों को चेतावनी दी गई है कि कुर्आन को न मानना सत्य का इन्कार है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब सूर्य लपेट दिया जायेगा।
2. और जब तारे धुमिल हो जायेंगे।
3. जब पर्वत चलाये जायेंगे।
4. और जब दस महीने की गाभिन
ऊँटनियाँ छोड़ दी जायेंगी।
5. और जब वन् पशु एकत्र कर दिये
जायेंगे
6. और जब सागर भड़काये जायेंगे।^[2]

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝

1 यह सूरह आरंभिक सूरतों में से है। इस में प्रलय तथा दूतत्व (रिसालत) का वर्णन है।

2 (1-6) इन में प्रलय के प्रथम चरण में विश्व में जो उथल पुथल होगी उस को

- | | |
|--|-----------------------------------|
| 7. और जब प्राण जोड़ दिये जायेंगे। | وَإِذَا النُّفُوسُ رُوِّجَتْ ۝ |
| 8. और जब जीवित गाड़ी गई कन्या से प्रश्न किया जायेगा: | وَإِذَا الْمَوْءِدَةُ سُئِلَتْ ۝ |
| 9. कि वह किस अपराध के कारण बध की गई। | يَأْتِي ذَنْبٌ قُتِلَتْ ۝ |
| 10. तथा जब कर्म पत्र फैला दिये जायेंगे। | وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرتْ ۝ |
| 11. और जब आकाश की खाल उतार दी जायेगी। | وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝ |
| 12. और जब नरक धहकाई जायेगी। | وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِرَتْ ۝ |
| 13. और जब स्वर्ग समीप लाई जायेगी। | وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝ |
| 14. तो प्रत्येक प्राणी जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है। ^[1] | عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ۝ |
| 15. मैं शपथ लेता हूँ उन तारों की जो पीछे हट जाते हैं। | فَلَا أُقْسِمُ بِالنُّجُومِ ۝ |
| 16. जो चलते चलते छुप जाते हैं। | الْبُجُورِ الْكُنُوسِ ۝ |
| 17. और रात की (शपथ), जब समाप्त होने लगती है। | وَاللَّيْلِ إِذَا عَصَصَ ۝ |

दिखाया गया है कि आकाश, धरती और पर्वत, सागर तथा जीव जन्तुओं की क्या दशा होगी। और माया मोह में पड़ा इन्सान इसी संसार में अपने प्रियवर धन से कैसा बे परवाह हो जायेगा। बन् पशु भी भय के मारे एकत्र हो जायेंगे। सागरों के जल प्लावन से धरती जल थल हो जायेगी।

- 1 (7-14) इन आयतों में प्रलय के दूसरे चरण की दशा को दर्शाया गया है कि इन्सानों की आस्था और कर्मों के अनुसार श्रेणियाँ बनेंगी। नृशंसितों (मजलूमों) के साथ न्याय किया जायेगा। कर्म पत्र खोल दिये जायेंगे। नरक भड़काई जायेगी। स्वर्ग सामने कर दी जायेगी। और उस समय सभी को वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा। इस्लाम के उदय के समय अरब में कुछ लोग पुत्रियों को जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे। इस्लाम ने नारियों को जीवन प्रदान किया। और उन्हें जीवित गाड़ देने को घोर अपराध घोषित किया। आयत नं० 8 में उन्हीं नृशंस अपराधियों को धिक्कारा गया है।

- | | |
|---|--|
| 18. तथा भोर की जब उजाला होने लगता है। | وَالضُّبُرِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝ |
| 19. यह (कुर्आन) एक मान्यवर स्वर्ग दूत का लाया हुआ कथन है। | إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝ |
| 20. जो शक्ति शाली है। अर्श (सिंहासन) के मालिक के पास उच्च पद वाला है। | ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝ |
| 21. जिस की बात मानी जाती है और बड़ा अमानतदार है। ^[1] | مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۝ |
| 22. और तुम्हारा साथी उन्मत्त नहीं है। | وَمَاصَّاجِكُمْ بِمَحْبُوتٍ ۝ |
| 23. उस ने उस को आकाश में खुले रूप से देखा है। | وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأَفْقِ الْمُبِينِ ۝ |
| 24. वह परोक्ष (गैब) की बात बताने में प्रलोभी नहीं है। ^[2] | وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۝ |
| 25. यह धिक्कारी शैतान का कथन नहीं है। | وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيزٍ ۝ |
| 26. फिर तुम कहाँ जा रहे हो? | فَإِنَّ تَذَهُبُونَ ۝ |
| 27. यह संसार वासियों के लिये एक स्मृति (शास्त्र) है। | إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝ |
| 28. तुम में से उस के लिये जो सुधरना चाहता हो। | لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ۝ |

1 (15-21) तारों की व्यवस्था गति तथा अंधेरे के पश्चात नियमित रूप से उजाला की शपथ इस बात की गवाही है कि कुर्आन ज्योतिष की बकवास नहीं। बल्कि यह ईश वाणी है। जिस को एक शक्तिशाली तथा सम्मान वाला फ़रिश्ता ले कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। और अमानतदारी से इसे पहुँचाया।

2 (22-24) इन में यह चेतावनी दी गई है कि महा ईशदूत (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सुना रहे हैं, और जो फ़रिश्ता बह्दी (प्रकाशना) लाता है उन्होंने उसे देखा है। वह परोक्ष की बातें प्रस्तुत कर रहे हैं कोई ज्योतिष की बात नहीं, जो धिक्कारे शैतान ज्योतिषियों को दिया करते हैं।

29. तथा तुम विश्व के पालनहार के चाहे | وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾
 बिना कुछ नहीं कर सकते।^[1]

1 (27-29) इन साक्ष्यों के पश्चात सावधान किया गया है कि कुर्आन मात्र याद दहानी है। इस विश्व में इस के सत्य होने के सभी लक्षण सब के सामने हैं। इन का अध्ययन कर के स्वयं सत्य की राह अपना लो अन्यथा अपना ही बिगाड़ोगे।